A–0446

Total Pages : 3 **Roll No. .....**

MASL–503

M.A. Sanskrit (MASL)

भारतीय दर्शन (भाग एक)

Examination February, 2026

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट :– यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 2×19=38

नोट :– खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्नलिखित में किन्हीं दो की व्याख्या कीजिए :

(क) असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।

शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्॥

(ख) मूलप्रकृतिरविकृर्तिमहदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त

षोऽशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः॥

(ग) घनच्छन्नदृष्टिर्घनच्छन्नचर्कं यथा मन्यतेनिष्पभ चातिमूढ़ः।

तथा बद्धवद्भाति या मूढ़ दृष्टेः स

नितयोपलब्धिस्वरूपर्पोऽहमात्मा॥

(घ) अज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकमस्ति शक्तिद्वयम्

2. सांख्यकारिका के अनुसार प्रकृति के स्वरूप का वर्णन करते हुए उसको सिद्ध कीजिए।

3. वेदान्तसार के अनुसार कर्म के स्वरूप पर भेद सहित प्रकाश डालिए।

4. प्रकृति पुरुष सम्बन्ध और सृष्टि प्रक्रिया समझाइए।

5. वेदान्त दर्शन की आचार्य परम्परा पर एक निबन्ध लिखिए।

अथवा

आवरण और विक्षेप शक्ति की समीक्षा कीजिए।

खण्ड–ख

लघु उत्तरीय प्रश्न 4×8=32

नोट :– खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. वेदान्तसार के मंगलाचरण की व्यख्या कीजिए।

2. निम्बार्क के अनुसार द्वैताद्वैत को स्पष्ट करें।

3. पंचीकरण प्रक्रिया की विवेचना कीजिए।

4. सांख्यकारिका के अनुसार 'पुरुषबहुत्व' सिद्ध कीजिए।

5. वेदान्तसार में वर्णित 'सूक्ष्म शरीर' के सिद्धान्त का विवेचन कीजिए।

6. सांख्य के कारणविषयक सिद्धान्त को क्या कहते हैं? व्याख्या कीजिए।

7. वेदान्तसार के अनुसार अज्ञान की परिभाषा देते हुए उसकी शक्तियों की व्याख्या कीजिए।

8. 'त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि' को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'तत्र अनुबन्धों नाम अधिकारिविषय सम्बन्धप्रयोजनानि'

****